ISSN·2229·3620

UGC APPROVED JOURNAL NO.. ·48819

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFERED RESEARCH JOURNAL

शोध संचार बुलेटिन

* Vol. 8 * Issue 30 April to June 2018

संपादक मण्डल

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. सुधीर प्रताप सिंह
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अर्जुन चव्हाण
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

डॉ. सन्त राम वैश्य
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

डॉ. महेश 'दिवाकर'
अध्यक्ष—अंतरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद

डॉ. एम. एल. यादव
राजकीय महाविद्यालय, बुलन्दशहर

डॉ. अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. किशोर कुमार
के. एम. राजकीय पी. जी. कॉलेज, गौतमबुद्ध नगर

डॉ. एस. चेल्लै
मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई

डॉ. अभय कुमार
भागीरथी देवी महाविद्यालय, अमरोहा

डॉ. राकेश राय
नागालैण्ड विश्वविद्यालय, कोहिमा

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा
के. एम. राजकीय पी.जी. कॉलेज, गौतम बुद्ध नगर

डॉ. रणधीर सिंह
दयाल सिंह पी.जी. कॉलेज, करनाल, हरियाणा

डॉ. सुधा कुमारी
लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रधान संपादक
डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

[redacted] एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ0प्र0), भारत द्वारा प्रकाशित

PUBLISHER
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow (D.P.) INDIA

PRINTER
Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi,
Lucknow, U.P. - 226001 (U.P.)

SUBSCRIPTION / MEMBERSHIP FEE

Single Copy (Special Order) Rs.300/-
Individual/Institutional

	FOR INDIANS	FOR FOREIGNERS	
One Year	Rs. 1000.00- (with Postal Charges)	Single Copy	US$60.00-
Five Years	Rs. 5,000.00- (with Postal Charges)	One year	US$150.00-
Life Time Membership	Rs. 10,000.00- (with Postal Charges)		

SPECIAL

All the Cheques/Bank Drafts should be sent in the name of the SANCHAR BULLETIN, payable at Lucknow. All correspondence in this regard should be sent by Speed Post to the Managing Editor, SANCHAR BULLETIN

CHIEF EDITORIAL OFFICE
Dr. Vinay Kumar Sharma
M.A., Ph.d., D.Litt. - Gold Medalist
Awarded by the President of India

Editor in Chief - SHODH SANCHAR BULLETIN
448/119/76, KALYANPVRI THAKURGANJ, CHOWK, LVCKNOW -226003 *V.P.,*
Cell.: 09415578129, 09415141368, 09161456922
E-mail: sanchar_bulletin@yahoo.com.dr.vinaysharma123@gmail.com

Publisher, Printer & Editor :-
Dr. Vinay Kumar Sharma Published at 448 /119/76 ,Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P.
and printed by Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi, Lucknow, UP. - 226001 (U.P.)

- The Views expressed in the articles printed in this Journal are the personal views of the Authors. It is not essential for the. Shodh Sanchar Bulletin Patrika or its Editorial Board to be in agreement with the views of Authors.
- Any material published in this Journal cannot be reprinted or reproduced without the written permission of the editor of the Journal.
- Printing, Editing, selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
- All disputes will be subject to Lucknow jurisdiction only.

अनुक्रमणिका

• दलित–स्वाभिमान एवं मानवतावाद की महागाथा : रश्मिरथी	डॉ0 अनिल राय	
• मीडिया, भूमंडलीकरण और भाषा	डॉ0 आनन्द प्रकाश गुप्ता	5
• प्राचीन भारत में कृषि व्यवस्था का इतिहास	डॉ0 रचना तिवारी	8
• श्री कृष्ण कवि कृत मन्दारमरन्दचम्पू में गुण मीमांसा	प्रियंका जैन	11
• बाल फिल्म "तारें जमीन पर" का भारतीय संदर्भ में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	चंदा शर्मा	16
• यादों के आईने में पूर्वांचल के श्रम लोकगीत	कुलदीप कुमार मौर्य	19
• उत्तर आधुनिक काव्य का वैचारिक स्वरूप	सुनिता यादव	22
• काव्य संवेदना का विवेचनात्मक अनुशीलन	बिरदी चन्द रैगर	25
• नासिरा शर्मा की कहानियों में मुस्लिम स्त्री चेतना	कृतिका शर्मा	29
• महाभारत में पुरूषार्थ चतुष्टय	ईशा काईल्या	32
• राजस्थानी फिल्मों में लोकगीत	सुमन गुर्जर	36
• मध्यवर्गीय नायक का पतन और नायकहीन उपन्यास की कल्पना	गनपत सिंह	39
• मीरा का काव्य और स्त्री विद्रोह	अनिता रानी	42
• प्रशासक और कवि रूप में अशोक वाजपेयी	धीरेन्द्र मोहन मीना	45
• गोविंद मिश्र के 'धूल पौधों पर' उपन्यास में चित्रित स्त्री–विमर्श	लक्ष्मण राम जाट	48
• प्रभा खेतान के उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण का स्वर	महादेव मीना	51
• कृष्णदत्त पालीवाल : अद्वितीय एवं वादमुक्त व्यक्तित्व	प्रिया कुमारी	54
• बाल साहित्य में मीडिया की भूमिका	रेणु सिंगोदिया	57
• आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैदिक साम्यवाद की प्रासंगिकता	रंजना कुमारी	61
• स्त्री आत्मकथा : अस्मिता संघर्ष तथा आत्मनिर्भर स्त्री (प्रभा खेतान के संदर्भ में)	अनिता गुप्ता	64
• क्रान्ति को समर्पित – सत्यभक्त	कुशलपाल सिंह	67
• मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता का प्रश्न ('मल्लिका' उपन्यास के सन्दर्भ में)	लक्ष्मी यादव	70
• सिख गुरुओं की रचना परम्परा और गुरु गोविंद सिंह का काव्य : एक अध्ययन	श्रीमती शीला देवी	73
• हिंदी साहित्य में आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का योगदान	दुर्गा कुमारी गहन	77
• काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'महुआ चरित' में सामाजिक विमर्श का यथार्थ चित्रण	विनोद कुमार यादव	80
▪ राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में दूरदर्शन का विश्वव्यापी योगदान	आलोक सक्सेना	83
▪ हिन्दी साहित्य के विकास में प्रवासी लेखकों का योगदान	सरिता सिंह	87
• धर्म की अवधारणा : साधारण और आपद्धर्म	डॉ0 कंचन शर्मा	92
• अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा–साहित्य में प्रगतिशील जीवन मूल्यों की स्थापना	मनोज कुमार मीना डॉ0 करतार सिंह	96

- हिंदी आलोचना **की वाचिक परम्परा** के आचार्य : नामवर सिंह — वन्दना सैनी — 100
- पूर्वी राजस्थान के कथात्मक लोकगीत : ढोला–मारू के विशेष संदर्भ में — शिव सिंह, डॉ0 करतार सिंह — 104
- **मुझे चाँद चाहिए** उपन्यास में स्त्री–चेतना के स्वर — अनुराधा जारवाल — 108
- **कोहली** के रामकथात्मक उपन्यासों में आधुनिकता बोध — श्रवण कुमार प्रजापति — 112
- संत दादूदयाल की सामाजिक चेतना — उषा देवी मीणा — 115
- आचार्य विनयचन्द्रसूरिकृत काव्यशिक्षा में उल्लिखित काव्यशिक्षापरक सिद्धान्तों की समीक्षा — पूजा अग्रवाल — 119

ENGLISH SECTION

- Critical Analysis of Feminism In Jane Eyre — Ms. Manisha — 124
- MOOC [Massive Open Online Course] A New Educational Paradigm In Digital India — Seema Tripathi — 128

ISSN - 2229-3620
UGC Approved Journal No. ·48819

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 8, Issue 30 April- June 2018
Page Nos. 1-4

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

दलित-स्वाभिमान एवं मानवतावाद की महागाथा : रश्मिरथी

डॉ0 अनिल राय*

शोध सारांश

भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था और जाति प्रथा की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। वैदिक युग से चली आ रही इस सामाजिक व्यवस्था को सबसे पहले गौतम बुद्ध ने चुनौती दी थी। उन्होंने घोषित किया कि जन्म से कोई ऊँचा और नीचा नहीं होता। ऊँच–नीच का निर्धारण कर्म से होना चाहिए। दिनकर युग बोध के कवि हैं।उन्होंने अपने आसपास व्याप्त सामाजिक व्यवस्था की इन विकृतियों को देखा और इन पर प्रहार करने के लिए महाभारत की कथा से एक अत्यंत उपेक्षित किंतु महत्वपूर्ण पात्र को नायक के रूप में प्रस्तुत कर रश्मिरथी की रचना की। 'रश्मिरथी' दलित–उत्थान, दलित– स्वाभिमान और मानवता की महागाथा बनकर आधुनिक साहित्य में प्रस्तुत हुआ है।

'दलित'शब्द भले ही आधुनिक सामाजिक चेतना का लगता हो, किंतु इसका वजूद हजारों वर्ष पुराना है। आधुनिक युग में इस शब्द के प्रयोग से पूर्व प्राचीन भारतीय वर्ण व्यवस्था में इसके लिए शूद्र, अस्पृश्य, तथा हरिजन आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता रहा है।ये केवल शब्द ही नहीं है बल्कि भारतीय समाज की क्रूर और अमानवीय व्यवस्था की अनुभूति के जीवंत दस्तावेज हैं ।यह भारत के इतिहास में शोषितों उपेक्षितों का वह वर्ग है जो ब्राह्मणवादी व्यवस्था के आघात से पैदा हुआ है। अमानवीय ब्राह्मणवाद को चुनौती देने के लिए वेदों के वर्चस्व पर प्रहार नितांत आवश्यक हो गया था। इसी आवश्यकता के अनुरूप भारत में अनेक दार्शनिक सिद्धांतों का उदय हुआ ।ब्रह्म, जीव और संसार की नयी व्याख्या करने वाले दर्शनों में कपिल का सांख्य–दर्शन, गौतम का न्याय दर्शन, जैमिनी का मीमांसा दर्शन,बादरायण का वेदांत–दर्शन ,महावीर का जैन दर्शन बुद्ध का बौद्ध दर्शन आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा है।भारतीय दर्शन में मुख्यतः दो समानांतर धाराएं प्रवाहित हुईं–एक भौतिक और दूसरी आध्यात्मिक। सबसे अधिक महत्वपूर्ण दर्शन बुद्ध का है जो मूलतः 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का दर्शन था. उन्होंने पहली बार व्यवस्थित ढंग से अपने समकालीन समाज की वर्णव्यवस्था को चुनौती दी।उन्होंने वर्ण भेद को ब्रह्म और दैवीय कसौटियों पर परखने की बजाय उसे कर्म और व्यवसाय के भौतिक आधार पर परखने की कोशिश की–

न जच्चा वसलो होति . ना जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मुना ही वसलो होति कम्मुना होति ब्राह्मणो ।

अर्थात जन्म से कोई व्यक्ति नीच नहीं होता और न ही जन्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण कहा जा सकता है। बल्कि कर्म के आधार पर किसी को नीच अथवा किसी को ब्राम्हण माना जा सकता है ।भक्ति आंदोलन में शास्त्रों के एकछत्र वर्चस्व को ध्वस्त कर लोक सत्ता की स्थापना का प्रयास किया गया। 'कागद की लेखी' की जगह 'आँखिन की देखी' को अधिक महत्त्व मिला। भक्ति आंदोलन के पश्चात औपनिवेशिक भारत में दलित–क्रांति की सार्थक कोशिश हुई। दलित समाज की मुक्ति की चेतना का संचार सर्वप्रथम महाराष्ट्र में ही हुआ था।

हिंदी नवजागरण में प्रेमचंद, निराला और राहुल सांकृत्यायन आदि ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में दलित समस्याओं से टकराने का पूरा प्रयास किया है। प्रेमचंद और निराला दोनों यह मानते थे कि भारतीय राष्ट्रीयता की पहली शर्त यही है कि सर्वप्रथम वर्णव्यवस्था और जाति प्रथा से यह देश मुक्त हो। राहुल सांकृत्यायन में दलित चेतना बौद्ध दर्शन के प्रभावस्वरूप आयी थी। वे केवल लेखक ही नहीं थे बल्कि जाति–व्यवस्था के विरुद्ध उन्होंने एक आंदोलन भी खड़ा किया। दिनकर न तो दलित समाज से थे और न ही उन्होंने दलित चेतना के कवियों की पंक्ति में रखा जाना चाहिए। दिनकर को दलित चेतना के कवि के रूप में देखना किसी को भी असामान्य और असहज लग सकता है। किंतु यदि दलित चेतना के बीज किसी कवि की किसी कृति में हो तो उसे खुले मन से स्वीकार कर लेना चाहिए और उस कवि का ईमानदार मूल्यांकन होना चाहिए। ऐसी ही एक रचना दिनकर ने लिखी है 'रश्मिरथी', जो 1952 में

*एसोसिएट प्रोफेसर - हिन्दी विभाग, श्यामलाल कॉलेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रकाशित हुई थी ।रश्मिरथी व
अलग नहीं है। कथा प्रसंगों
महाभारतकार से अलग करती है
कुरुक्षेत्र की रचना के बाद की।
उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए दि
चुकने के बाद ही मुझ में यह भाव जाग
लिखूं, जिसमें केवल विचारोत्तेजना ही
वर्णन का भी महात्म्य हो स्पष्ट है, य
जो मेरे भीतर उस परंपरा के प्रति भी
प्रतिनिधि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी हैं
स्पष्ट रूप से गुप्तजी की प्रबंध–रचन
द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मक प्रबंध रच
कड़ी है।इस रचना का शीर्षक–निर्धार
उपेक्षित किंतु सशक्त चरित्र कर्ण को म
असीम श्रद्धा व्यक्त करते हुए किया। र
अपनी जाति, वंश, गोत्र आदि के कार
वह सच्चाई, ईमानदारी,
दानशीलता,जनपक्षधरता और अपनी
कारण इस रचना का नायक बनता
समक्ष कर्ण के रूप में एक ऐसा महामा
सदियों से दलितों–पिछड़ों की उपेक्षित
करता है। दिनकर ने रश्मिरथी की भू
दलितों और उपेक्षितों के उद्धार का
मानवीय गुणों की पहचान बढ़ने वाली
अहंकार विदा हो रहा है । आगे म
अधिकारी होगा जो उसके सामर्थ्य से र
नहीं जो उसके माता–पिता या वंश की

रश्मिरथी में आकर दिनकर
आदर्शवादिता की राह छोड़कर प्रग
दिखायी देते हैं। भारत में ऊँच
सांप्रदायिकता का भयावह परिवेश दिन
था। इसी माहौल में उनकी दृष्टि महाभ
ओर गयी। कर्ण दिनकर के हाथों पर
,मैत्री ,दानशीलता तथा श्रेष्ठ मानवता
जिसके समक्ष देवराज इंद्र का भी मस्त

तू पहुँचा है जहाँ कर्ण, देवत्व
इस महान पद को कोई, मानव

यहाँ अनेक परंपरागत मूल्य
स्थापित होते दिखायी पड़ते हैं ।कर्ण
इंद्र और कृष्ण का भी प्रभामण्डल
आधुनिक दृष्टि के कारण ही दिनक
क्षत्रिय की नयी परिभाषा गढ़ी। उनक
है कि जाति का निर्धारण जन्म

की कथा से
दिनकर को
रचना दिनकर ने
में उन्होंने अपने
की रचना कर
कोई ऐसा काव्य भी
कथा–संवाद और
का उद्गार था
, जिसके सर्वश्रेष्ठ
दिनकर का संकेत
। है रश्मिरथी
परंपरा में अगली
महाभारत के
कर उसके प्रति
थ पर सवार कर्ण
नहीं है बल्कि
धर्मनिष्ठता,
मैत्री–भावना के
' के पाठक के
कर आता है जो
अभिव्यक्ति प्रदान
– "यह युग
हमारे समाज मे
और जाति का
उस पद का
है, उस पद का

गुप्त की
पथ पर बढ़ते
जात–पात तथा
विचलित कर रहा
कर्ण जैसे पात्र की
पौरुष ,दया, क्षमा
बन गया है
जाता है
सकता है,
सकता है।[4]
और नए मूल्य
की चमक में
जाता है ।अपनी
में ब्राह्मण और
समय आ गया
के आधार पर

किया जाना चाहिए–

ऊँच–नीच का भेद न जाने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है
दया धर्म जिसमें हो सबसे, वही पूज्य प्राणी है
क्षत्रिय वही भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप त्याग।[5]

दिनकर ने यहाँ कर्ण को एक नये मिथक में ढालने की सफल कोशिश की है।यहाँ कर्ण एक ऐसे चरित्र के रूप में उदित हुआ है जो मानवता का उत्कृष्ट रूप धारण करता हुआ सहानुभूति और श्रद्धा का महान पात्र हो जाता है। रश्मिरथी का आधार महाभारत की कथा है। संपूर्ण कथा में द्रौपदी के चीर–हरण का प्रसंग एक ऐसी घटना है जो मानवता के मस्तक पर सबसे बड़ा कलंक बनकर उभरती है। यहाँ आकर दिनकर थोड़ा ठहर से जाते हैं और पाते है कि मानवता का ऐसा उपहास भारत के इतिहास में संभवतः कभी नहीं हुआ है। उनकी यह पीडा कुरुक्षेत्र में भीष्म के माध्यम से व्यक्त हुई थी–

नर की कीर्ति ध्वजा उस दिन कट गयी देश में जड से,
नारी ने सुर को टेरा जिस दिन निराश हो नर से ।[6]

रश्मिरथी मे भी कर्ण के माध्यम से दिनकर की यही पीड़ा व्यक्त हुई है । जब वह मृत्यु को प्राप्त होने वाला है उसे इस बात की ग्लानि है कि जब द्रौपदी के चीर–हरण द्वारा मानवता को कलंकित किया जा रहा था, उस समय उसने द्रौपदी की रक्षा क्यों नहीं की –

नहीं किंचित मलिन अन्तर्गगन,
कनक से ही हमारा स्वच्छ मन है।।
अभी भी शुभ्र उर की चेतना है,
अगर है तो यही बस वेदना है–
वधू जन को नहीं रक्षण दिया क्यों ?
समर्थन पाप का उस दिन किया क्यों ?
न कोई योग्य निष्कृति पा रहा हूँ,।
लिये यह दाह मन में जा रहा हूँ ।[7]

रश्मिरथी में कर्ण अपने जीवन और कथन से यह स्थापित करना चाहता है कि निम्न कुल में पैदा होने मात्र से संस्कार निम्न नहीं हो जाते। उच्च कुल में पैदा होने वालों के संस्कार भी निम्न हो सकते हैं। दिनकर ने 'रश्मिरथी' में केवल दलित–जीवन की त्रासदी को ही नहीं व्यक्त किया है, वहाँ उन्होंने स्त्री जीवन की भी अनेक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलायी है। कर्ण का स्वयं को राधेय कहना कुंती को यातना पूर्ण लगता है। कुंती की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि उसने अविवाहिता होते हुए कर्ण को जन्म दिया था कवि ने इस रचना में अविवाहित मातृत्व की समस्या और उसकी त्रासदी को कुंती के कथन के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति दी है। सामाजिक प्रतिष्ठा और लोकलाज के भय से कोई माँ किस प्रकार अपने नवजात शिशु को त्यागने पर विवश हो जाती है, मातृत्व की इस अव्यक्त पीडा को व्यक्त करना भी दिनकर

का लक्ष्य है। ऐसा घटित होना माँ और शिशु दोनों के लिए हृदय विदारक है। कुंती कर्ण से कहती है

बेटा, धरती पर बड़ी दीन है नारी,
अबला होती सचमुच योषिता कुमारी।
है कठिन बंद करना समाज के मुख को,
सिर उठा न पा सकती पतिता निज सुख को ।[6]

दिनकर युद्ध को भी मानवता के लिए अभिशाप समझते हैं। किंतु यदि युद्ध कोई थोपता है तो सामने वाले पक्ष का दायित्त्व है कि वह उसका प्रत्युत्तर दे। दिनकर के सामने यह एक बड़ी समस्या के रूप में प्रस्तुत होता है कि महाभारत के युद्ध को धर्मयुद्ध कहा जाए अथवा नहीं। युद्ध कोई भी हो उसे धर्मयुद्ध कहना बहुत मुश्किल कार्य है। धर्म वह है जो साध्य ही नहीं साधन की पवित्रता की भी जाँच करता है। जबकि युद्धरत मनुष्य का ध्यान साधन पर न होकर साध्य पर ही होता है। वह हर हाल में विजय प्राप्त करना चाहता है ।महाभारत के युद्ध में कौन धर्म के पथ पर चला और कौन अधर्म के पथ पर, दिनकर के सामने इसका निर्णय करने की बड़ी चुनौती है। लाशों से पटी रणभूमि को देखकर उनका द्वंद्व यहां अनेक सवाल खड़े करता है–

लेकिन था कौन हृदय जिसका कुछ भी यह देख दहलता था?
था कौन नरों की लाशों पर जो नहीं पाँव धर चलता था?
है कथा द्रोण की छाया में यों पाँच दिनों तक युद्ध चला,
क्या कहें धर्म पर कौन रहा या उसके कौन विरुद्ध चला?[9]

रश्मिरथी का चतुर्थ सर्ग कर्ण की दान शीलता के प्रसंगों पर आधारित है। पांडव पक्ष को बराबर यह आशंका होती थी कि जब तक कर्ण के पास जन्मप्रदत्त कवच और कुंडल रहेगा उसे न तो मारा जा सकता है और न ही कौरव सेना को 4रा।जित ही किया जा सकता है। कृष्ण ने अर्जुन के देवपिता इंद्र से कहा कि यदि तुम्हें अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा करनी हो तो कर्ण के शरीर से उसका कवच–कुंडल अलग करना होगा। यह कार्य इंद्र के लिए सरल नहीं था। थक कर इंद्र ने कर्ण की द।नवीरता को ही अपने छल का हथियार बनाया और उसका कवच–कुंडल माँगने चले गए। इस सर्ग के मुख्य चरित्र हैं कर्ण और इंद्र । 'दिनकरः अर्धनारीश्वर कवि' में नंदकिशोर नवल लिखते हैं––"रश्मिरथी का चतुर्थ सर्ग इसके द्वितीय सर्ग की तरह ही अतिशय उत्तम रूप में रचा गया है । इसमें आद्यन्त शुद्ध सारछंद का प्रयोग हुआ है, जिसमें कहने की आवश्यकता नहीं कि कथा–प्रसंग, वर्णन, चरित्र–चित्रण और संवाद बहुत सफलतापूर्वक लिखे जा सकते हैं। इस वर्ग के मुख्य चरित्र हैं कर्ण और इंद्र। इन दोनों का ही बहुत श्रेष्ठ चित्रण दिनकर जी ने किया है। किसी छोटे कवि के हाथ में पड़कर इंद्र आसानी से खलनायक बन सकते थे, लेकिन कवि ने इन दोनों का चित्रण इतनी गहराई से किया है कि वह अत्यंत मर्मस्पर्शी हो गया है ।[10] क्रूर नियति और विषम परिस्थितियों के द्वारा कर्ण बार–बार छला जाता है ।कभी वह ब्र।ह्म1व।दी व्यवस्था से आहत होता है तो कभी र।जनीतिक षड्यंत्र का शिकार होता है। वह इस धोखे से लड़े जा रहे युद्ध पर अनेक सवाल खड़े करता है। वह कहता है–

तनिक सोचिए, वीरों का यह योग्य समर क्या होगा?
इस प्रकार से मुझे मार कर व्यर्थ अमर क्या होगा।
एक बाज का पंख तोड़ कर करना अभय अपर को,
सुर को शोभे भले नीति यह, नहीं शोभती नर को [11]

कर्ण नियति के इस रहस्य को समझ नहीं पाता कि सारी विपदाएँ उसी के अंक में क्यों चली आती हैं। वह यह भी नहीं समझ पाता कि यदि पूर्व जन्म के कर्मों के फलस्वरुप उसके साथ ऐसा घटित हो रहा है तो उसे जन्म के साथ कवच और कुंडल मिले ही क्यों थे ।बात बिल्कुल साफ है कि यहाँ भाग्य और पूर्व जन्म की कोई भूमिका है ही नहीं। यह समाज के उस वर्ग का रचा हुआ कुचक्र है जो दलित–शोषित एवं संघर्षशील व्यक्ति के हाथ निजध्वज फहराते हुए देख नहीं सकता। अर्जुन के पक्षधर इंद्र कुछ भी कर लें, धोखे से उसका कवच कुंडल भी ले लें किंतु यहाँ जीत कर्ण की ही होगी ।उसकी दानशीलता, मैत्रीभाव, और तप–साधना की जीत होगी । यहाँ दिनकर ने अर्जुन और कर्ण के चरित्र को आमने–सामने रखकर कर्ण को महामानव बना दिया है। इस कथा–वर्णन में अर्जुन के चरित्र में संकुचन स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है–

दो वीरों ने किंतु लिया कर आपस में निपटारा,
हुआ जयी राधेय और अर्जुन इस रण में हारा;
यह कह उठा कृपाण कर्ण ने , त्वचा छील क्षण भर में,
कवच और कुंडल उतार धर दिया इंद्र के कर में ।[12]

रश्मिरथी के अंतिम सर्ग की समाप्ति युधिष्ठिर और कृष्ण के संवाद से होती है। युधिष्ठिर कर्ण की मृत्यु पर प्रसन्न होते हैं क्योंकि कर्ण की वीरता देख उन्हें अर्जुन की जीत पर संदेह हो गया था। कृष्ण बहुत उदास मन से कर्ण के अंत को याद करते हैं और अत्यंत दार्शनिक शैली में कहते हैं –

हुआ जाने नहीं क्या आज रण में?
मिला किसको विजय का ताज रण में ?
किया क्या प्राप्त हम सबने दिया क्या?
चुकाया मूल क्या सौदा लिया क्या ?[13]

ये सभी प्रश्न किसी न किसी रूप में कवि दिनकर के अंतर्मन को मथते रहे हैं। युद्ध के पश्चात अनेक ऐसे सवाल मुंह खोले खड़े होते हैं जिनके जवाब ढूंढना आसान नहीं होता। वस्तुतः रश्मिरथीकार दिनकर कर्ण के तेजस्वी चरित्र के उत्कर्ष द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त वर्णवाद ,जातिव।द और अभिजात्यवाद के ढांचे को तोड़ने का यत्न करते हैं।कर्ण भारतीय समाज के जिस वर्ग के उत्थान के लिए अवतरित हुआ था उसका उल्लेख दिनकर ने कृष्ण के मुख से स्पष्ट रूप से करवाया है –

हृदय का निष्क4ट पावन क्रिया का,

दलित–तारक समुद्धारक त्रिया का,
बड़ा बेजोड़ दानी था, सदय था,
युधिष्ठिर ! कर्ण का अद्‌भुत हृदय था![14]

दिनकर के समकालीन समाज में निश्चित रूप से दलितों व स्त्रियों की समस्या विकराल रूप में रही है ।रश्मिरथी में कर्ण द्वारा उठाए गए अनेक सवाल दलित अस्मिता से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।दलित–उपेक्षित होने के कारण कर्ण को वर्ण वादी समाज के अनेक षडयंत्रों का शिकार होना पड़ा। दिनकर में दलितों–पिछड़ों के प्रति संवेदनशीलता काफी रही है। उन्होंने कर्ण के मिथक द्वारा पूरी मानवता को ग्रसित करने वाली सामाजिक व्यवस्था और वर्णवादी संकीर्ण मानसिकता के कठोर ढाँचे को ढहाने का उपक्रम किया है।कर्ण को दिनकर नेयहाँ 'दलिततारक' और 'समुद्धारक त्रिया का' कहकर आने वाले समय में सामाजिक साहित्यिक विमर्श के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषयों को एक संभावनापूर्ण प्लेटफार्म देने का काम किया। दिनकर सही मायनों में युग की हुंकार के कवि हैं। उनकी स्त्री व दलित–समर्थक हुंकार समकालीन साहित्य के दोनों ही बड़े विमर्शों दलित विमर्श और स्त्री विमर्श में सुनी जा सकती है।

सन्दर्भ :–

1. सुत्त निपात ,पृष्ठ–290
2. दिनकर रचनावली खंड 5, सं. नंदकिशोर नवल, पृष्ठ–171
3. वही, पृष्ठ–173
4. वही, पृष्ठ–232
5. वही, पृष्ठ–177
6. वही, पृष्ठ–95
7. वही, पृष्ठ–318
8. वही, पृष्ठ–238
9. वही, पृष्ठ–273
10. दिनकर : अर्धनारीश्वर कवि, नंदकिशोर नवल, पृष्ठ–138
11. दिनकर रचनावली खंड 5, पृष्ठ–226
12. वही, पृष्ठ–230
13. वही, पृष्ठ–322
14. वही, पृष्ठ–322

DDD